अशुद्ध और शुद्ध वाक्य

भाषा के वर्ण, शब्द तथा वाक्य आदि के प्रत्येक स्तर पर कुछ ऐसे निश्चित नियम होते हैं जिनसे भाषा का मानक स्वरूप बनता है। जो प्रयोग मानक स्वरूप से भिन्न है वह अशुद्धि है। वाक्यरचना की अशुद्धियों का मुख्य कारण होता है व्याकरणिक नियमों का सही रूप में न जानना। अतः हमें बोलने या लिखने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ कहा या लिखा जाए, वह बिलकुल स्पष्ट, सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

यहाँ हम शुद्ध वाक्यरचना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करेंगे।

पदक्रम संबंधी नियम :

वाक्य में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न पदों को एक सुनिश्चित क्रम में रखने से वाक्य-रचना शुद्ध होती है। हिन्दी में पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म तथा अंत में क्रिया आते हैं। उदा.: जितेन्द्र क्रिकेट खेलता है।

(2) कर्ता और कर्म को छोड़कर शेष कारक प्रायः कर्ता और कर्म के बीच स्थित होते हैं।

उदाहरण - माँ अपने पुत्रों के लिए खाना बनाती हैं। (सम्प्रदान)
- माताजी चाकू से फल काटती है। (करण)
- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान)
- लड़के मैदान में क्रिकेट खेलते हैं। (अधिकरण)

कुछ स्थलों पर ये कारक कर्म के बाद भी प्रयुक्त हो जाते हैं। जैसे-
- प्रियंदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखा।

(3) प्रश्नवाचक पद प्रश्न के विषय से ठीक पहले प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - अपराधी का पता चला?
- क्यों यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा है?
- आप को न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार है?

(4) क्रियाविशेषण सदैव क्रिया के पूर्व आते हैं।

उदाहरण - मोहन धीरे-धीरे चल रहा है।
- श्याम तेज़ी से दौड़ रहा था।

(5) वाक्य के विभिन्न पदों के बीच तर्कसंगति होनी चाहिए।

उदाहरण - छात्रों ने गुरुजी को एक फूलों की माला पहनाई । (अशुद्ध वाक्य)
छात्रों ने गुरुजी को फूलों की एक माला पहनाई । (शुद्ध वाक्य)
- यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। (अशुद्ध वाक्य)
गाय का शुद्ध दूध यहाँ मिलता है। (शुद्ध वाक्य)

(6) 'न' या 'नहीं' का नकारात्मक अर्थ में प्रयोग क्रिया से पहले होता है।

उदाहरण - शिक्षक महोदय घर पर नहीं मिलेंगे।
- शिष्य क्षमा नहीं माँगेगा।

(7) आग्रह के लिए 'न' अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है।

उदाहरण - चलोगे न ।
- तुम भी जाओ न।

अन्वय संबंधी नियम :

'अन्वय' अर्थात् 'मेल' या 'अनुरूपता'। वाक्यों के पदों की क्रिया का उसके लिंग, वचन, काल और पुरुष के अनुरूप होना 'अन्वय' कहलाता है। अन्वय संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) जब कर्ता और कर्म विभक्ति सहित होते हैं तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
1. माँ ने लड़की को **बुलाई**	1. माँ ने लड़की को **बुलाया।**
2. क्या आपने मीना को **पहचानी?**	2. क्या आपने मीना को **पहचाना?**

(2) भिन्न-भिन्न लिंगों की दो या अधिक व्यक्तिवाचक या जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आयें तो क्रिया अक्सर पुल्लिंग बहुवचन में आती है।

उदाहरण :

- राम, लक्ष्मण और जानकी वन में गये।
- गाय और बैल चर रहे हैं।
- राजा और रानी नगर में गये।
- जंगल में भालू, शेर और लोमड़ी रहते हैं।

(3) यदि कर्ता का लिंग अज्ञात हो तो क्रिया पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : तुम्हारा खर्चा कौन चलाता है?

(4) आदरार्थक एकवचन कर्ता के लिए क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : गाँधीजी महान नेता थे।

(5) आँसू, दर्शन, दाम, प्राण, लक्षण, समाचार, हस्ताक्षर, होश, ओठ, बूँद, लोग आदि शब्दों के साथ क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण :

- उसके आँसू रुकते ही नहीं।
- मेरे प्राण संकट में आ गये।
- विवाह के शुभ समाचार मिले।
- लोग तो बात बनाते रहते हैं।

(6) प्रत्येक, हरएक, एक एक आदि शब्दों के साथ आनेवाले संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- क्लास में प्रत्येक लड़के उत्तीर्ण होंगे।	- क्लास में प्रत्येक लड़का उत्तीर्ण होगा।
- हरएक मजदूर अफ़सर से मिलें।	- हरएक मजदूर अफ़सर से मिले।
- आपके भाषण के एक एक शब्द तुले हुए थे।	- आपके भाषण का एक-एक शब्द तुला हुआ था।

(7) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- तुम्हारी स्कूल कहाँ है?	- तुम्हारा स्कूल कहाँ है?

गलत	सही
– यह मेरी कॉलिज है।	– यह मेरा कॉलिज है।
– उसका देह दुर्बल है।	– उसकी देह दुर्बल है।
– उनका आवाज़ कोमल है।	– उनकी आवाज़ कोमल है।

(8) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– आज मौसम सुहावनी है।	– आज मौसम सुहावना है।
– आजकल कपास महँगा है।	– आजकल कपास महँगी है।
– उसका नाक लम्बा है।	– उसकी नाक लम्बी है।
– पीतल पीली होती है।	– पीतल पीला होता है।

(9) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– मेरी आम सड़ी हुई है।	– मेरा आम सड़ा हुआ है।
– तुमने झूठ क्यों बोली?	– तुमने झूठ क्यों बोला?
– आत्मा नहीं मरता।	– आत्मा नहीं मरती।
– बर्फ एक रुपये किलो बिकता है।	– बर्फ एक रुपये किलो बिकती है।

(10) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही संबंध विभक्ति (का, की) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– परमात्मा का महिमा अपार है।	– परमात्मा की महिमा अपार है।
– बंबई की बाज़ार अच्छी है।	– बंबई का बाज़ार अच्छा है।
– उसमें मुकाबला करने का सामर्थ्य नहीं है।	– उसमें मुकाबला करने की सामर्थ्य नहीं है।
– मुझे केवड़े की शरबत पसंद है।	– मुझे केवड़े का शरबत पसंद है।

अन्य नियम :

(1) विभक्ति संबंधी नियम :

(क) विभक्ति लगाने पर – यह, ये, वह, वे, कौन, जो, कोई... सर्वनाम के रूप बदल जाते हैं। जैसे–

विभक्ति-रहित रूप	**विभक्ति लगने पर रूप**
यह	इस
ये	इन
वह	उस
वे	उन
कौन	किस, किन
जो	जिस, जिन
कोई	किस, किन

उदाहरण :

गलत	**सही**
- यह घर में कौन रहता है?	- इस घर में कौन रहता है?
- ये लोगों में एकता नहीं है।	- इन लोगों में एकता नहीं है।
- वह आदमी को दौलत का घमंड है।	- उस आदमी को दौलत का घमंड है।
- वे लोगों को अनाज़ चाहिए।	- उन लोगों को अनाज चाहिए।
- आप कौन को बुलाते हैं?	- आप किसको (किसे) बुलाते हैं?
- ये थैलियाँ कौन की हैं?	- ये थैलियाँ किन की हैं?
- जोको पुकारूँ वहीं आवे।	- जिसको पुकारूँ वही आये।
- जो लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।	- जिन लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।
- कोई का पेन यहाँ रह गया।	- किसीका पेन यहाँ रह गया।

(ख) संज्ञा में प्रत्यय अलग से और सर्वनाम में प्रत्यय साथ में लिखा जाता है।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के बाद उसी व्यक्ति का यदि फिर से निर्देश करना हो तो 'अपना', 'अपनी' अपने आदि सर्वनामों का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- मैं मेरा काम करता हूँ।	- मैं अपना काम करता हूँ।
- वे उनकी धून में मस्त हैं।	- वे अपनी धून में मस्त हैं।
- तुम तुम्हारे घर जाओ।	- तुम अपने घर जाओ।

(2) शब्दों का उचित प्रयोग :

(1) शब्द के अर्थ के संबंध में शब्द का वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक है।

- हमें अपने माता-पिता की शुश्रूषा करनी चाहिए । (गलत)
- हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए । (सही)
  - 'शुश्रूषा' रोगी की की जाती है। माता-पिता एवं श्रेष्ठ जनों के लिए 'सेवा' शब्द का प्रयोग होना चाहिए।
- इस समय उनकी आयु 70 वर्ष है। (गलत)

  इस समय उनकी उम्र 70 वर्ष है। (सही)
  - 'आयु' जीवन की पूरी गणना को कहते हैं।
- तलवार एक उपयोगी अस्त्र है। (गलत)

  तलवार एक उपयोगी शस्त्र है। (सही)
  - 'अस्त्र' हाथ से फेंककर चलाया जानेवाला हथियार है; जबकि 'तलवार' हाथ में रखकर चलाई जाती है।

(2) दो बलाघातों का लगातार प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जैसे : - इसे बावजूद भी वह आता-जाता रहा। (गलत)

- इसके बावजूद वह आता-जाता रहा। (सही)

(3) शब्द का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- एक ही भाव को दो बार कहने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) मात्र केवल छात्रों के लिए। (अशुद्ध)

केवल छात्रों के लिए (अथवा) मात्र छात्रों के लिए (शुद्ध)

(2) आपका भवदीय (अशुद्ध)

आपका (अथवा) भवदीय (शुद्ध)

- मुहावरे का गलत रूप से प्रयोग करने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) उसके मुँह से फूल गिरते हैं। (अशुद्ध)

उसके मुँह से फूल झड़ते हैं। (शुद्ध)

(2) सर्प को दूध खिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (अशुद्ध)

सर्प को दूध पिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (शुद्ध)

- अपने नाम के साथ 'श्री' शब्द को छोड़कर वाक्य लिखना चाहिए।

उदाहरण :

(1) मेरा नाम श्री महेशभाई है। (गलत)

मेरा नाम महेशभाई है। (सही)

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :**

(1) घर आता है वह आदमी।
(2) आज वहाँ मीना ने जाना है।
(3) वह बुद्धिमान स्त्री है।
(4) वृक्षों पर कोयल बोल रही है।
(5) उसे कितना आम चाहिए।
(6) बेटी तो पराया धन होता है न?
(7) सविता ने चंद्रिका को बुलायी।
(8) यह घर में कौन रहता है?
(9) रघुवीर को एक लड़की हुई है।
(10) मेरा नाम श्री मनोजकुमार है।
(11) आप यहाँ बैठो।
(12) वह बड़ा चालाक है।
(13) यद्यपि वह निर्धन है परंतु ईमानदार है।
(14) जो करेगा वह भरेगा।
(15) पुलिस के आते ही चोर दुम उठाकर भाग गया।

●